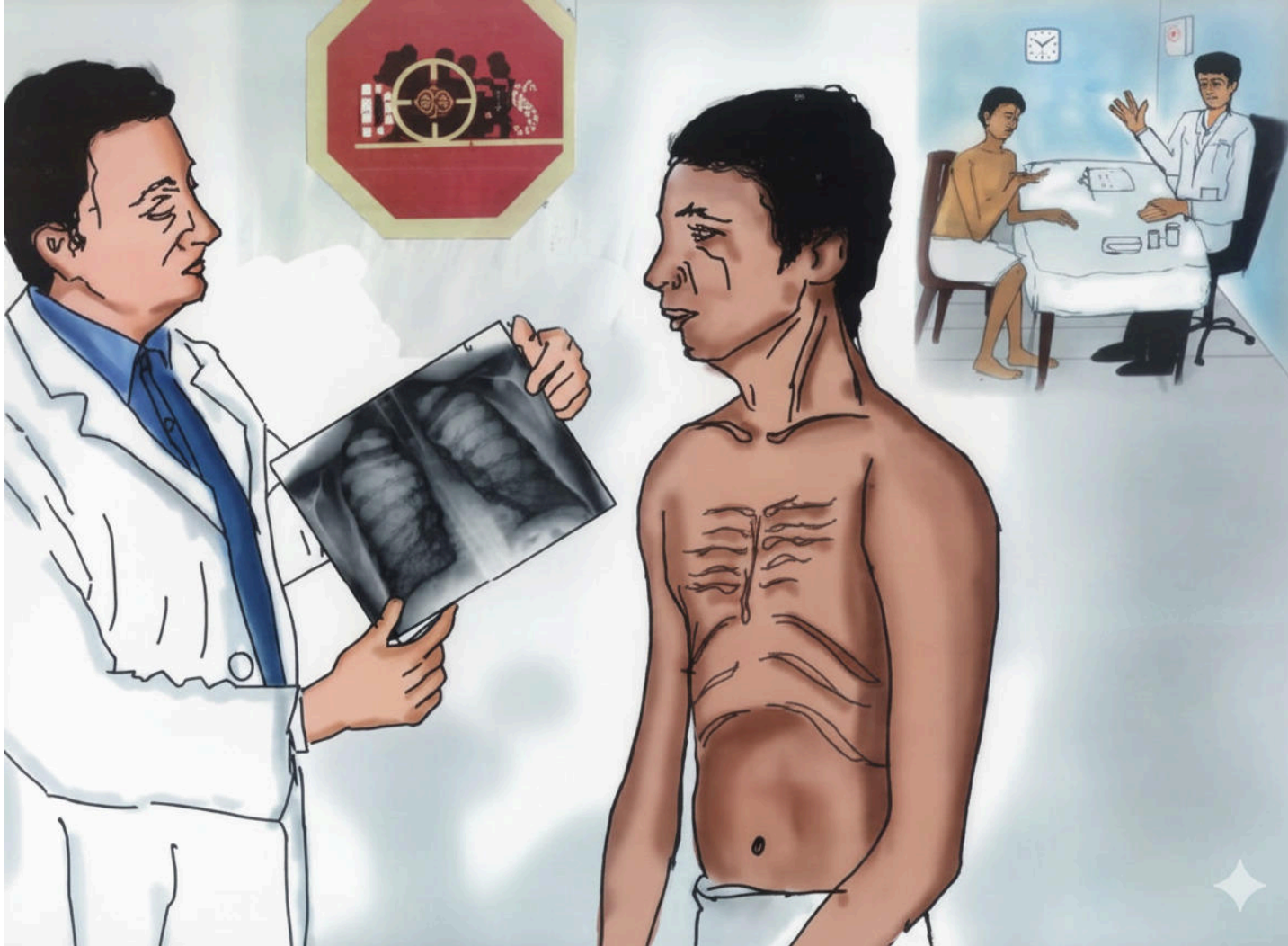


टीबी री बीमारी



Bangani

टीबी री बीमारी

Bangani
uttarkashi, uttrakhand, india

For permission to reuse, contact the copyright holder.

Big book in Bangani language
Community based Book

परकाशण:-
NLCI
बंगाणी मसी समिति समू

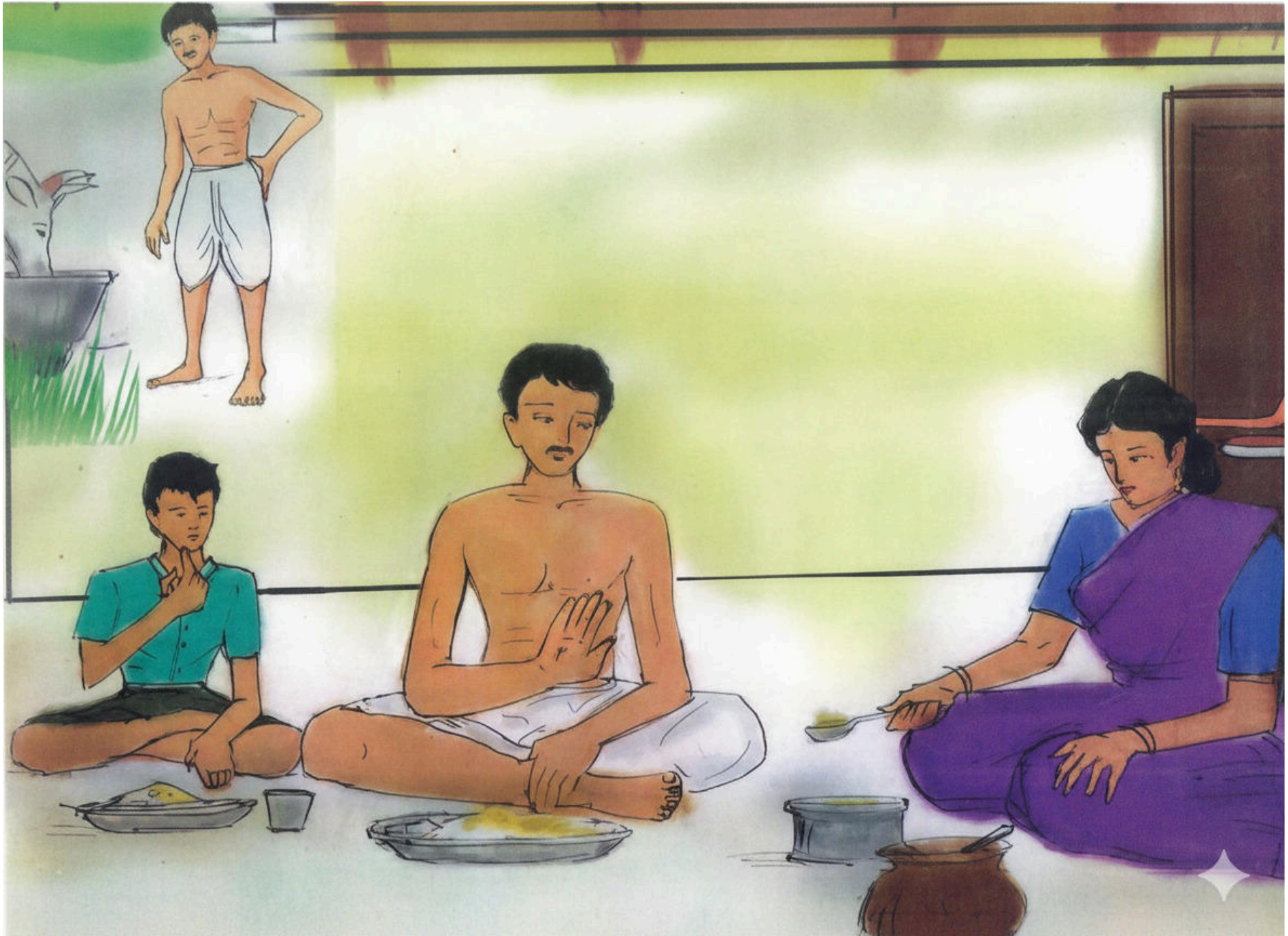
दो बात

यह किताब बंगाणी भाषा में बनायी गयी है। इस किताब में एक कहानी है जिसे 10-12 पेजों में बनाया गया है और हर पेज में लगभग 2-3 वाक्य है। इस किताब में हर एक वाक्य के अनुसार चित्र भी डाला गया है। इन चित्रों के आधार से पढ़ने वाला कहानी बता सकता है और पढ़ाने वाला कहानी सुना सकता है। इस पुस्तक का उपयोग साक्षरता कार्यक्रम में किया जाता है। यह किताब बड़े ही आसान और बहुत ही कम शब्दों में और बहुत सरल रीति से बनायी गयी है। ताकी जो लोग पढ़ने की शुरूआती स्तर में हैं वह आसानी से इस कहानी को अपनी अपनी मातृ-भाषा में पढ़के आसानी से समझ सकें और अपनी मातृ-भाषा में पढ़ने और लिखने का प्रयास कर सकें।

॥धन्यवाद॥



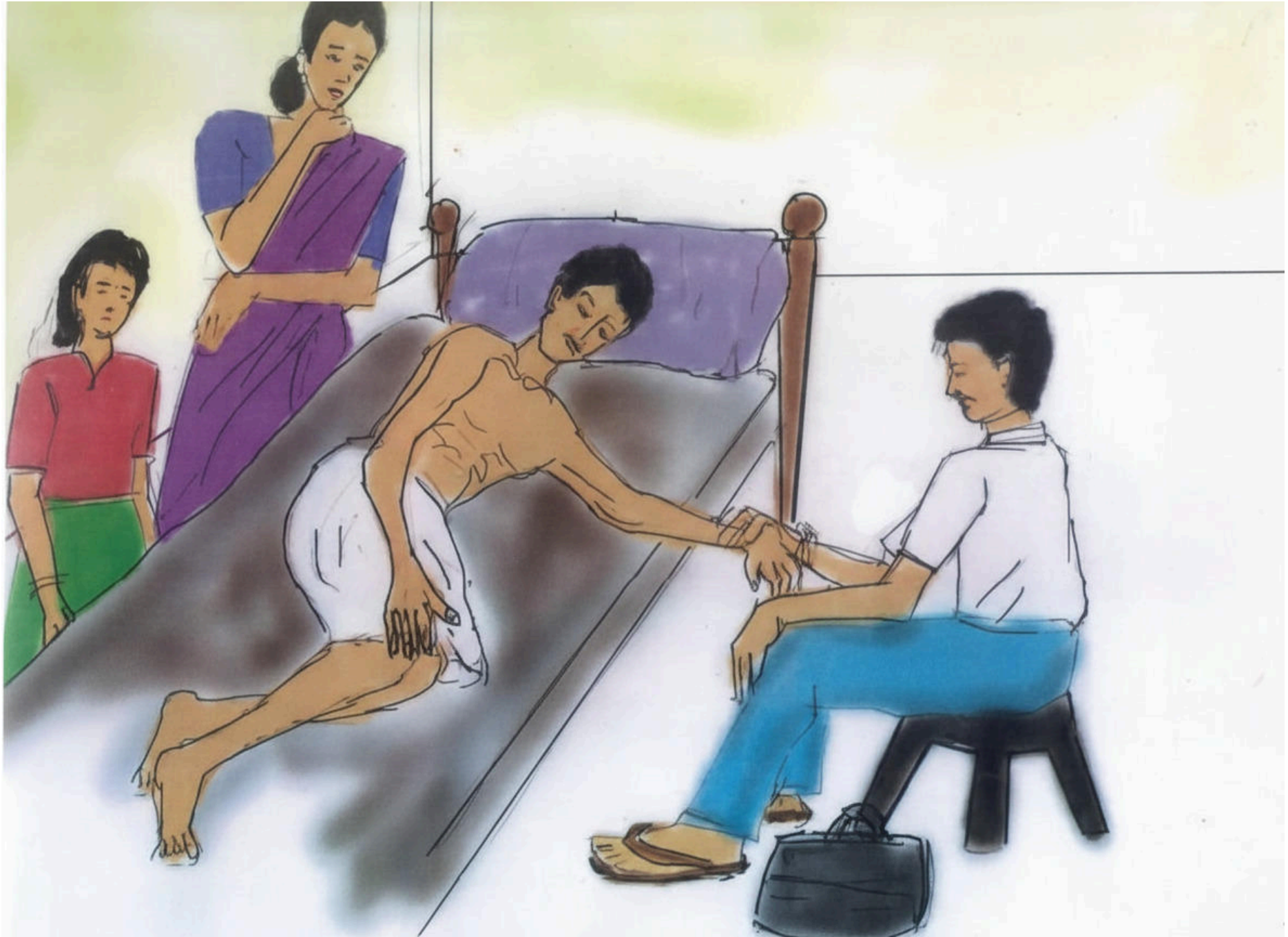
रामू नौऊं रौ एक माणूछ बौरी
ताकतवर थौ। सेउ आपड़ै पौरिबार
रै साथै खूशी कौइ रौयै थौ।



कुछ दूस बासियै रामू आपड़ौ
शौरीर दी बौरी थौकान मैसूस
कौरदै लागौ ।



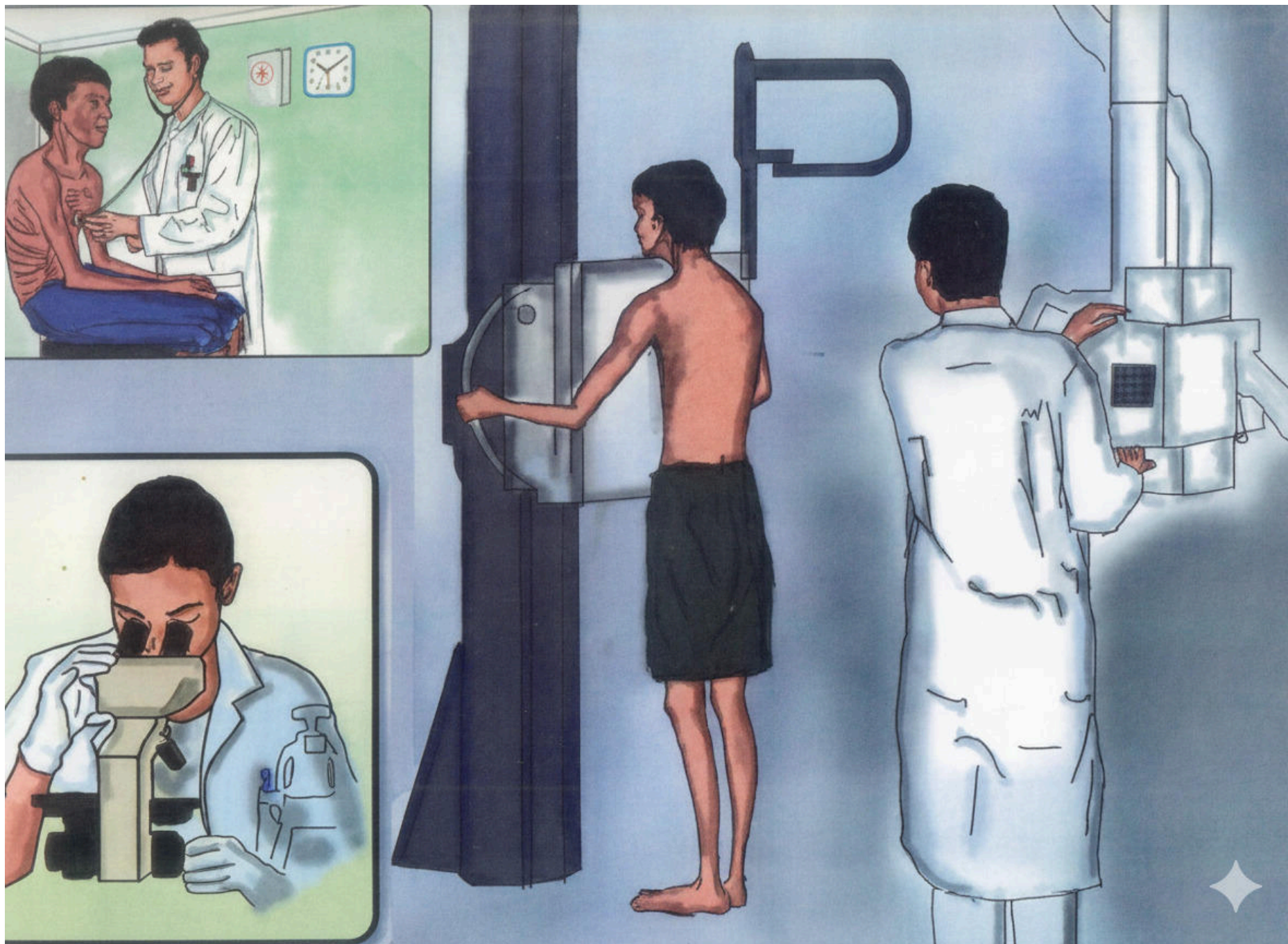
एज़ी बौज़ै कौड़ रामू कमज़ोर ऊन्दै
लागौ। औज़ि तेस बौरी खाँसी
औज़ि बूखार आन्दै लागै।



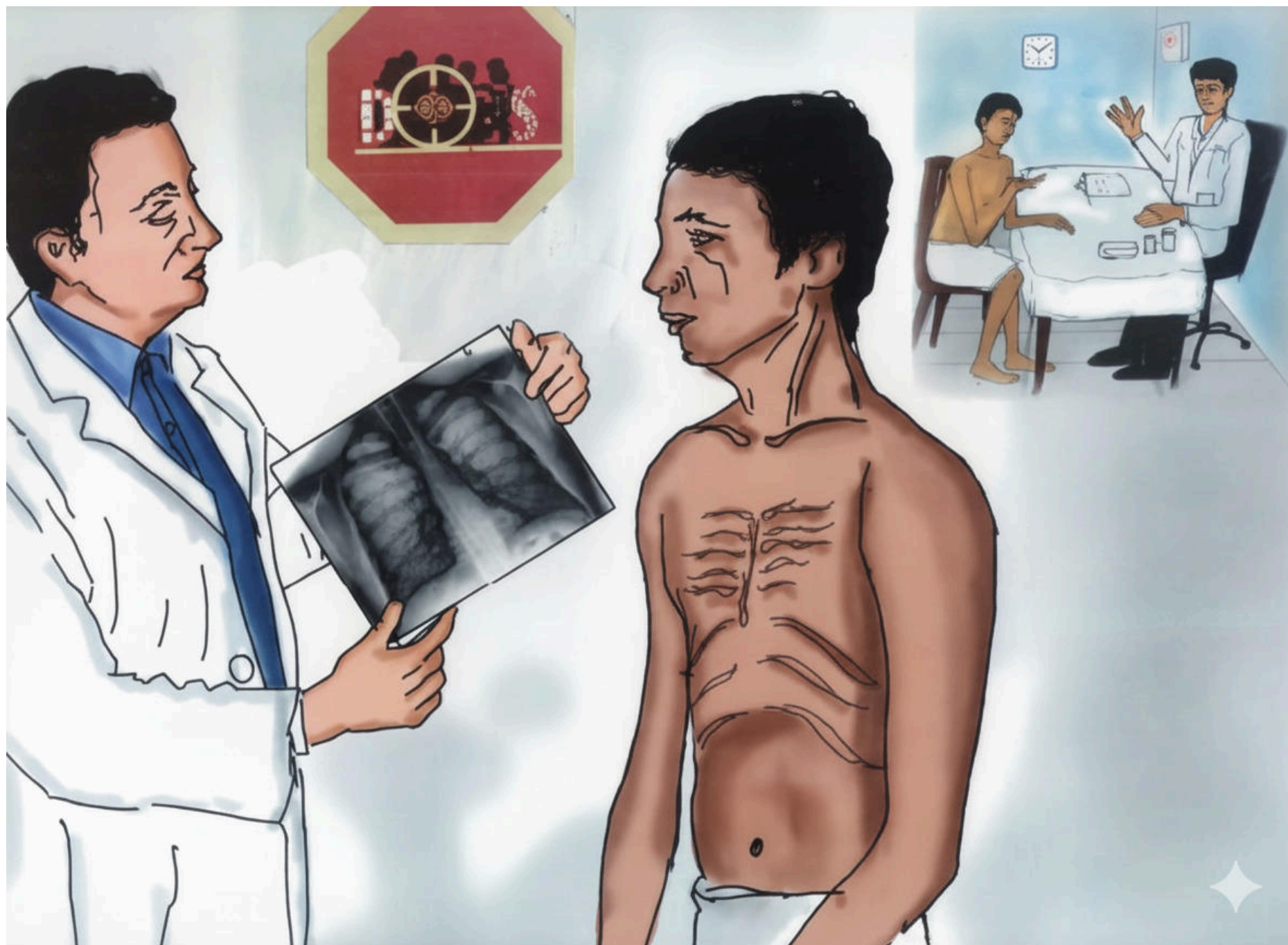
तैबै तिउं आपड़ौ गौरे दि एक
डौक्टर औटाओ, डौक्टरेइ रामू कै
सूई लाइयौ बोलौ कि ऐबै तू ठीक
औयै लौ।



थोड़े बौकतै बासियै रामू कै बलगम
रै साथै खून आन्दै लागौ, एज़ी बौज़ै
कौइ रामू बौरी डौरी मोरौ ।



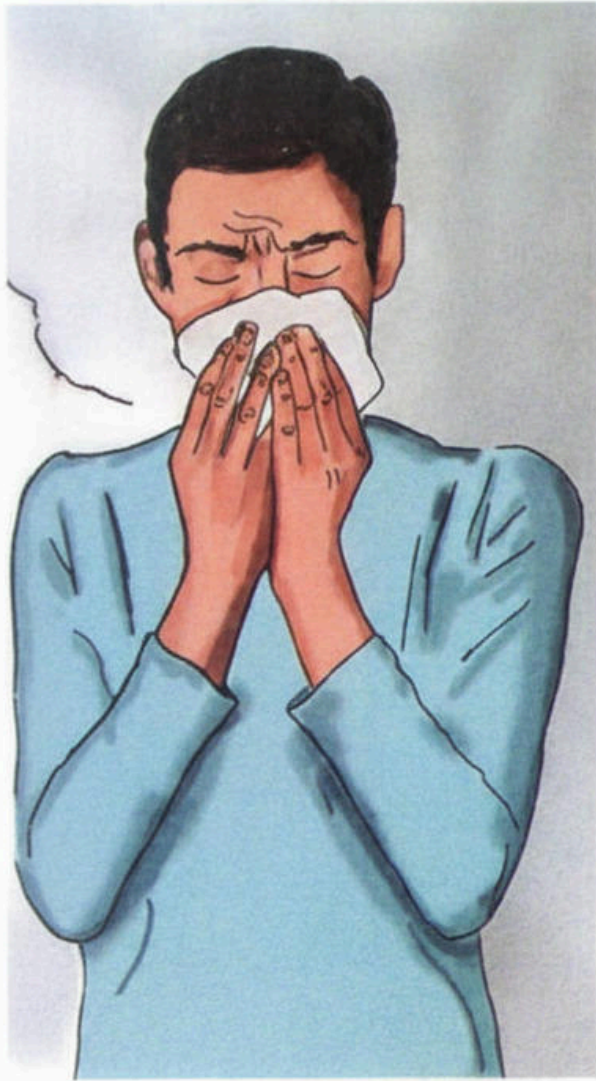
तेतबासियै रामू शैर रै बौड़ौ
औस्पताल दी डैअ तेत्कै डौक्टेरेइ
तेसरी खाँसी री ज़ांच कौरी।



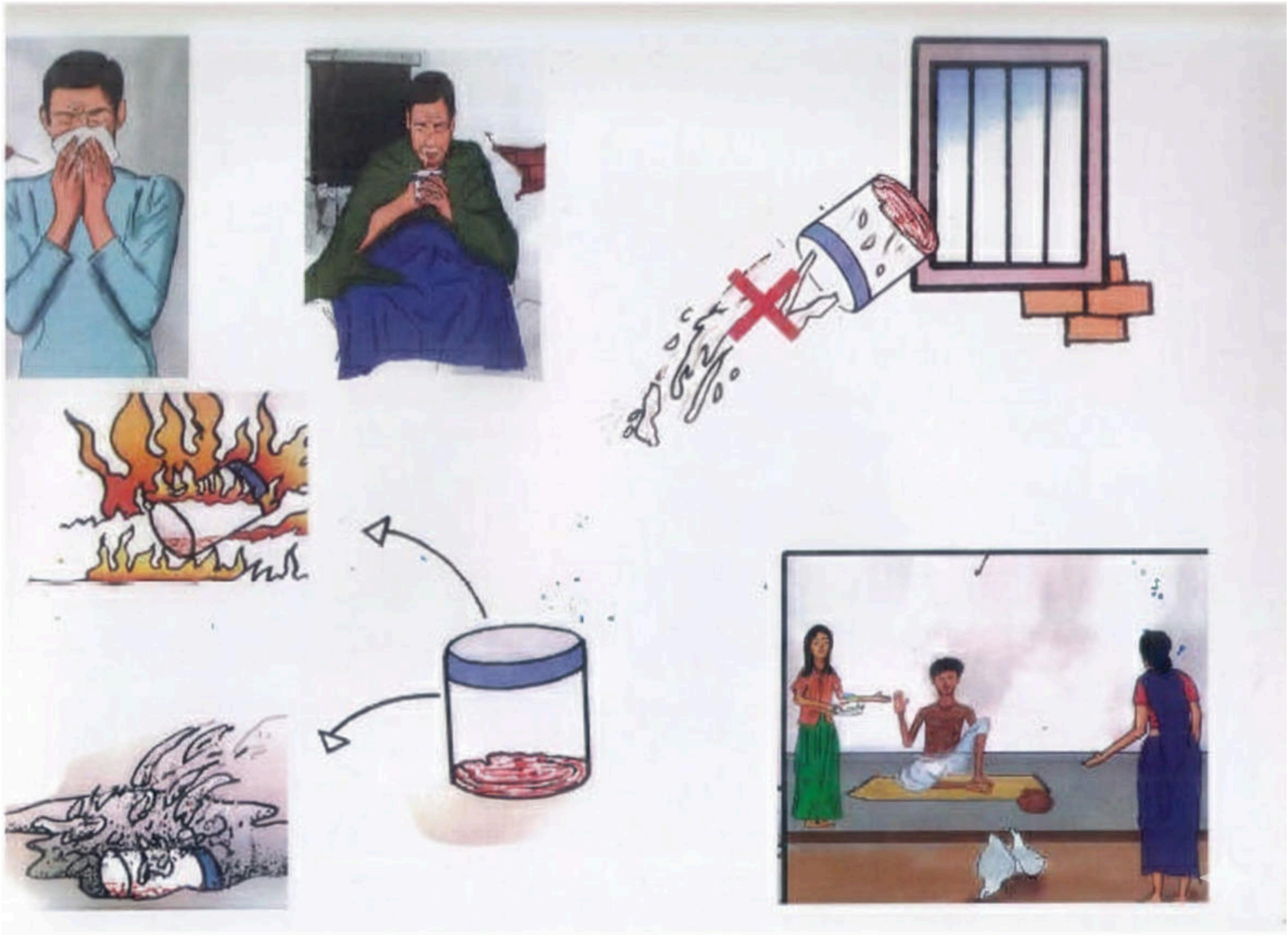
ਔਝਿ ਰਾਮੂ ਰੀ ਢਾਤੀ ਰੈ ਏਕਸਰਾ
ਕਿਯੈ ਔਝਿ ਰਾਮੂ ਆਰੀ ਬੋਲੈ, ਕਿ
ਤਾਊਂ ਦਿ ਟੀਬੀ ਰੀ ਬੀਮਾਰੀ ਝੁੜ ਗੋੜ।



तैबै डौक्टेरेइ रामू आरी बोलौ कि
गौबरा नौथि, ईं बीमारी रौ ईलाज़
औस्ति, बस छौ मीनै ज़ौउं दुवाई
खा, ज़ौ बीचेदी दुवाई खाणौ
पोरु छोड़ै लौ, तै ऐ बीमारी बौरी
बौड़ै ली।



तैबै डौक्टरेइ रामू कै सौला देणी,
कि खूंगिन्दू बैरै मुऐ पारै रूमाल ला,
जेसकौइ ऐ बीमारी कासी दुजै
माणछेदी ना ली डै।



ज़ौ खाँसी रै साथै बलगम आशै
तै तेस कासी डौबा पोरु थौइयौ
तेतबासियै तेस आगी कौइ
पोरु ज़ौळाइयौ



बौड़िया खाणौ खाणै कौइ बीमारी
कौइ ज़ुटिणेरी ताकत मिलै ।

For the Teacher

This Big Book is designed to be used for two weeks. It promotes enjoyment of storybooks, development of vocabulary, the skills of prediction, sequencing and main idea, and the understanding that books are made up of words.

On **Monday**, the teacher

- shows everyone the cover of the book
- reads the title, while moving a finger under it
- turns to the first page, and discusses the picture (asks the children to predict what will happen)
- reads the text on the first page, fluently (not slowly), and
- asks the children what they think they will see on each page. (The teacher is the only one “reading.”)

On **Tuesday**, the teacher

- shows everyone the book, and
- reads the story again, following the words with a finger, without as much discussion of the pictures.

On **Wednesday**, the teacher

- invites children to join in with “reading” when the story comes to parts which are familiar to them
- shows a flashcard from the story and tells the class what the card says, and
- invites children to find the same word in the storybook (or to match the card with the word in the book to see if it is the same)

On **Thursday**, the teacher

- points smoothly to the words in the story and lets some volunteers “read” a page, if they can remember the story by now, and
- lets the children match the flashcards to the words in the story.

On **Friday**, the children

- act out (dramatize) the story as others help the teacher “read” it.

यह किताब NLCI के द्वारा तैयार की गई है।

हम मात्रभाषा में साक्षरता कार्यक्रम करते हैं। जिसके अन्तर्गत हम अपने क्षेत्र में अलग अलग भागों में शिक्षा देते हैं। जिसमें हमारा उद्देश्य यह है कि, हमारे क्षेत्र के असाक्षर लोग और बच्चे साक्षर हो सकें।

और पढ़ लिख कर अपने समाज का विकास कर सकें।

हम जानते हैं कि हमारे क्षेत्र के अधिकतम लोग बोल-चाल में हो या काम-काज में हर स्थान पर अपनी मात्रभाषा का उपयोग करते हैं। इसलिए हम अपने क्षेत्र के लोगों के लिए जो भी पाठ्य सामग्री तैयार करते हैं। उसे उन्हीं की मात्रभाषा में तैयार करते हैं। जिससे उन्हें पढ़ने और लिखने में आसानी हो और वो जल्दी ही पढ़ना और लिखना सीख सकें।

हम अपनी संस्था में साक्षरता के द्वारा मात्रभाषा में वयस्क शिक्षक ही नहीं चलाते बल्कि, अपने क्षेत्र में पढ़े-लिखे लोगों के लिये तथा बच्चों के लिये भी अलग-अलग तरह की पाठ्य सामग्री भी उन्हीं की मात्रभाषा में उपलब्ध कराते हैं। जिससे की बच्चे अपने बचपन से ही अपनी मात्रभाषा को महत्व दें जिससे हमारी भाषा लुप्त ना हो। हम प्रार्थना करते हैं कि हमारे क्षेत्र के सभी लोग पढ़ लिख सकें और हमारे क्षेत्र का और अधिक विकास हो सकें।

.....धन्यवाद.....

